E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

भारतीय कृषक- समाज की वर्तमान दारुण दशा और दुर्दशा : 'फॉंस'

प्रा. डॉ. गणेश प्रभाकर निवारे

सहा. प्राध्यापक

मत्स्योदरी कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय अंबड।

ता. अंबड जि. जालना - 431204

ई-मेल - niwareganesh@gmail.com

भ्रमण ध्वनि - 9404273173 ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर है । एकमात्र कृषि ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। ऐसा बचपन में स्कूली शिक्षा में यह पाठ पढ़ाया गया था। किन्तु वर्तमान समय में खेती करना एक फांस बन चुका है। सहसा किसानी एक डर या बीमारी है। जिसका अंतिम हश्र मौत है। और मौत का ही दूसरा नाम 'किसानी' करना है। सच तो यह है कि ना ' खेती ' करना छूटता है और ना ही 'किसानी' और ना ही आत्महत्या का सिलसिला रुकता है। इस रीढ़ की हड्डी को बेतहाशा कुचलने का काम देश की सरकारे तथा उनकी विभिन्न नीतियों का रहा है। जिससे मुक्ति पाना असंभव सा है। दु:ख, दर्द, पीड़ा को सहकर भी भारतीय किसान आर्थिक रूप से विपन्नावस्था में जीने के लिए आज भी अभिशप्त है।

सदियों से किसान अहर्निश कष्ट करने के बाद भी बदहाली, लाचारी, दारिद्रतापूर्ण फटेहाल जिंदगी जीने के लिए विवश क्यों है ? अब तक किसानों की इस दशा और दुर्दशा को लेकर सुधार क्यों नहीं हो रहा । वर्तमान में क्यों सरकारों का ध्यान केवल बड़ी-बड़ी कंपनियों, नए-नए उद्योगों,पूंजीपतियों के घरानों, नगर निगमों आदि के विकास पर जितना ध्यान दे रही है ना महज़ उससे आधा भी ध्यान 'किसानी 'पर दे तो देश का चित्र अवश्य बदलेगा । हम भारतीय इतिहास की ओर देखेंगे तो उसमें न जाने कितनी सत्ताएँ आयी और चली गई परंतु किसानों पर हो रहा अन्याय, अत्याचार और आत्महत्याओं के शिवाय किसान के हिस्से में अधिक कुछ ना आया। किसान आत्महत्या तब करता है जब जीने के सब रास्ते बंद हो जाए। दिनों - दिन बढ़ती हुई किसानों की आत्महत्याएँ दरअसल यह तो यहाँ की ही व्यवस्था द्वारा की गई 'हत्या' है। वर्तमान में कोई किसान आत्महत्या करता है तो परिवार जनों को आर्थिक मदद सरकारे दे तो रही है पर किसान जिंदा रहते उसकी फसल को सही **न्यूनतम समर्थन मूल्य** आज तक देने में ना कामयाब रही है ।

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

आज का युग भूमंडलीकरण ,उपभोक्तावाद, बाजारीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी का है इस कारण बाजार की हर वस्तु बाजार में ना रहते हुए चौखट पर पहुँच चुकी है। आज बाजार में हर एक वस्तुओं के दाम तय है जिसे हम बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल से चुपचाप बिना कुछ बोले खरीदते हैं। क्योंकि जिस मालिक ने वह वस्तु बनाई है उसे उसके दाम तय करने का अधिकार प्राप्त है। परंतु एकमात्र इस धरती पर 'किसान' ही ऐसा व्यक्ति है जिसकी फसल (धान) की कींमत बाजार में दूसरा ही तय करता है। अपना खून पसीना बहाकर जिस फसल (धान) का निर्माण वह करता है वह दूसरों के हाथों बेचने के लिए विवश होता है। हां यहाँ पर अपने माल का सही **न्यूनतम समर्थन मूल्य** तय करने का अधिकार किसानों को प्राप्त नहीं होता। वह दारिद्रतापूर्ण जीवन जीने के लिए हमारे ही देश के राजनेता तथा राजनीतिक नितियाँ ही किसानों को भिखारी बनने पर मजबूर कर रही है।

संजीव कृत 'फाँस' उपन्यास में केवल विदर्भ के किसानों की दयनीय दशा ही नहीं तो समस्त भारत के किसानों का दु:ख, दर्द, पीड़ा का जीवंत दस्तावेज है। प्रेमचंद के बाद किसानों के जीवन मैं आने वाली विभिन्न समस्याओं पर आधारित यह दूसरा उपन्यास 'फाँस' है। प्रस्तुत उपन्यास में आत्महत्या, छुआछूत, अन्याय, अत्याचार, आर्थिक शोषण, सामाजिक समस्याओं का चित्रण है। आज का भारतीय किसान अपने फर्ज और कर्ज के चक्रव्यूह में ध्वस्त होने के लिए किस प्रकार मजबूर है इसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत उपन्यास में है। उपन्यास की पात्र छोटी (कलावती) कहती है – "इस देश का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है"।[१]

समाज व्यवस्था में श्रेष्ठ पूंजीपति वर्ग की इच्छा है कि भारतीयों किसान ऐसे ही कर्ज के बोझ में दबा रहे और किसानी करता रहे। एक दिन इस कर्ज के असहाय बोझ के तले एक दिन वह आत्महत्या करें। ये समाज-व्यवस्था द्वारा की गई 'हत्या' ही तो है। 'फाँस' यह उपन्यास वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से सन् 2015 में प्रकाशित हुआ जो लगभग 257 पृष्ठों में और 42 अध्याय में विभक्त है। हर एक अध्याय एक दूसरे पर आश्रित ना होते हुए भी एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल ज़िले के गाँव जिसमें मुख्य रूप से बनगाँव के साथ ही गडचिरोली, चंद्रपुर, यवतमाल, धानोरा बासोडा, नागौरा आदि गाँव तक सीमित नहीं है बल्कि तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बुंदेलखंड, छत्तीसगढ़ के साथ-साथ भारत के समस्त किसानों की दर्द भरी कारूणिक कथा है। भारतीय किसान 'किसानी' से जुड़े प्रश्नों, आत्महत्याओं के सत्र को हमारे सामने प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। हुक़्मरानों की जिंदगी से तंग आकर पिशाच्य का साया हमारे अतीत , वर्तमान और भविष्य पर भी मंडराता हुआ नजर आता है। किसानों की दिनों दिन बढ़ती आत्महत्याएँ उपन्यास का मुख्य ज्वलंत प्रश्न है।

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

फाँस उपन्यास का केंद्रीय गाँव बनगाँव में स्थित शिव शंकर उर्फ शीबू और शकुंतला के परिवार की दर्दभरी कहानी है। उन्हें दो संताने है और दोनों लड़कियां है बड़ी का नाम सरस्वती और छोटी का कलावती है। शीबू यह भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करने वाला केंद्रीय पात्र है। बनगाँव में विभिन्न जाति धर्मो के लोग रहते हैं और सभी लोग किसानी करते हैं। गाँव में ऊँच-नीच, छुआछूत, भेदभाव आदि में लोग विश्वास रखते हैं, जिसके कारण लोग दो हिस्से में बट गए हैं।

निम्न वर्ग के किसानों की जमीन पहाड़ी क्षेत्र पर है और ऐसे में अक्सर बारिश होती है तो सारा पानी खेतों से बाहर चला जाता है। इसी कारण फसले अच्छी नहीं होती तो कुछ उच्चवर्गीय किसानों की जमीन समतल क्षेत्र पर होने के कारण उन्हें अच्छा उत्पादन होता है साथ ही उच्च वर्ग के लोगों ने सामान्य जनों की जमीनें भी छल -कपट, धोखाधड़ी करके हस्तगत कर ली है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र शीबू के नाम पर केवल तीन एकड़ जमीन है जिसके आधार पर ही वह अपना परिवार का गुजर -बसर करता है। छोटी लड़की कलावती पढ़ने में होनहार है पढ़कर कुछ बनना चाहती है। परंतु गाँव के लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगती और शिबू से गाँव के लोग कहते हैं की लड़कियों को पढाने से वह बिगड़ जाती है बेटियां बड़ी हो जाने के बाद उनकी शादी की चिंता शीबू को सताने लगती है।

शादी में दहेज की चिंता सताने लगती है शीबू के पास इतना पैसा नहीं है कि धूमधाम से बेटियों की शादी कर सके तथा खेतों से जो भी आमदनी मिलती वह सब घर खर्चे में ही उड़ेल जाती है। शकुन को भी यह बात सताने लगती है और वह कहती है अगर उनकी शादी हमें करना है तो कर्ज लेना पड़ेगा तो ही हम शादी कर पाएंगे यह कर्ज की समस्या ही पूरे उपन्यास में हमें दीमक की तरह दिखाई देती है। जिसके कारण कई लोगों ने अपनी जमीने कम दामों में बेच दी और उन पर दूसरे गॉव जाकर मजदूरी करने की नौबत आ जाती है। जिसमें नाना और मोहन वाघमारे दोनों काम के संदर्भ में बातचीत करते हैं नाना हँसते हुए कहता है- " काम तो इन दोनों एक ही है बालू , मिट्टी, ईट या खादा की दुलाई। सड़कों के किनारे सारी खेती वाली जमीने बिक चुकी है। मकान बन रहे हैं। आने वाले दिनों में सिर्फ बिल्डिगें होगी, चमचमाती सड़के होगी, और चमचमाती गाडियाँ, न हमारे तुम्हारे जैसे लोग होंगे न शेती, न हमारी, तुम्हारीं बैलगाड़ियाँ"।[२]

इस बात से साफ ज़ाहिर होता है कि ज़्यादातर लोगों से जमीने छीनी या जबरन खरीदी कर ऊँची-ऊँची इमारतें तानकर खड़ी कर दी है। तो कई सरकारी योजनाओं में कहीं पर बाँध, नहर, सड़के, बिल्डिगें आदि को बनाने में जमीने चली गई। जिस कारण उन पर दूसरे गाँव जाकर काम करने की नौबत आ चुकी है। कुछेक लोगों के पास जमीनें है परंतु जो फसल (धान) बाजार ले जाते हैं वह कम दामों में

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

खरीदते हैं जिसके कारण उनका आर्थिक रूप से बहुत बड़ा घाटा होता है। माप-तौल में घोटाला करना , उचित दामों में ना खरीदना। ऐसे अनगिनत कारणों से किसानों के साथ अन्याय होता है। किसानों का स्वर है- हम बिकाऊ है। हमारा सब कुछ बिकाऊ है। हमें खरीद लो। मार डालो या काट डालो। सिर्फ पेट भर भोजन और इनसान की जिंदगी दे दो हमें।"[३]

उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सरकारें भी किसानों को भूमि विहीन कर रही है आज किसानों की स्थिति बद से बत्तर होती जा रही है। अपने परिवार को चलाने के लिए केवल भोजन को ही महत्व देते हैं। परंतु वह भी उनसे छीना जा रहा है। सरकार उनकी जमीने छीनकर नई-नई सड़के, बिल्डिंगे , नहरे, बाँध ,ऊंची -ऊंची इमारतें कल - कारखाने शुरू करना चाहती है। जिसके कारण आज का किसान बेघर होकर मजदूर बनकर जीने के लिए उन्मुख हो।

एक दिन बनगाँव में मूसलाधार बारिश होती है ओला गिरता है। जिसके कारण कपास की फसल सारी की सारी नष्ट हो जाती है और गॉव के सारे किसान घोर निराशा में डूब जाते हैं, कि अब दूसरा बीज कहाँ से लाएं और उसके लिए कर्ज लेने बैंक में चले आते हैं। परंतु बैंक भी उन्हें कर्ज देने से साफ़ इन्कार कर देती है सभी किसानों को बैंक से लोन नहीं मिलता जिन्हें मिलता है वह खुश हो जाते हैं बाकी लोग साहूकार के पास जाते हैं। विट्ठल साहूकार सबको कहता है- " फसल के लिए पैसा चाहिए या मुलगी की शादी के लिए, घर के मरम्मती के लिए, या किसी और कार्य के लिए हम जानकर क्या करेगा जमीन का कागज़ जमा करो टिप दो और ले जाओ हॉ रेट टेन परसेंट है।"[४] उक्त कथन से स्पष्ट है कि, साहूकार भी अवा का सवा कर्ज़ को रेट लेकर किसानों का शोषण करने में लिप्त है।

इसी को तंग आकर एक दिन शीबू घर छोड़कर कुएँ में कूद कर आत्महत्या कर लेता है। यह बात पूरे गाँव में फैलती है लाश को बाहर निकाल कर पोस्टमार्टम पंचनामा किया जाता है। संकटों से हार कर शीबू मृत्यु को गले लगाता है क्योंकि उसका सारा परिवार कर्ज़ चुकाने में तबाह हो चुका है। एक ही परिवार की तीन-तीन किसान जब आत्महत्या करते हैं। तो न जाने उनके परिवार कितने बिखर जाते होंगे। आत्महत्या करने के बाद जब से एक कागज़ का टुकड़ा मिलता है उसमें किसानों की वेदना का पता चलता है। पिता द्वारा लिखी हुई कविता। ये कविता है या 'सुसाइड नोट' इससे वेदना का पता चलता है।

"अलग हूं मैं
इसलिए स्वाभाविक है मेरी जिंदगी
मेरी मौत चकित कर देगी तुम्हें

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

बे मौसम बारिश की तरह
कविता का चहेता मेरा अस्तित्व
कापूस की फसल की तरह है
इसकी जड़ों में हैं मिठास
जैसे मिठास होती है ' ऊस ' के तने में
मेरी मौत को कहेंगे ये,
पागल हैं
कैसे झूल रहा है ,
जैसे झूलता है दरवाज़े के फ्रेम में
'कृष्ण.....।"[५]

उपरोक्त कविता से स्पष्ट होता है कि भारतीय किसान सबसे अलग है उसका दु:ख, दर्द, पीड़ा सबसे अलग है कभी वह किसी के सामने गिड़गिड़ाता नहीं है। पूरे सन्मान के साथ जीना चाहता है। किसानों को केवल किसानी, बीज, खाद, उर्वरक, कीटनाशक आदि ही नहीं तो परिवारजनों की अन्य ज़रूरतें भी पूर्ण करनी होती है। जैसे - बच्चों की शिक्षा - दीक्षा, उन्हें अच्छे संस्कार देना, अच्छी स्कूलों में प्रवेश कराना, और बड़े होने पर बेटे - बेटियों की शादियाँ करना। आदि बातों पर सरकरें एवं उनकी नीतियाँ भी कोई उचित क़दम (निर्णय) नहीं ले रही है। आत्महत्याओं की यह समस्या तभी खत्म होगी जब तक कोई राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर किसानों के हित का निर्णय लेकर काम करेगा। ना ही इसे केवल चुनावी मुद्दा बनाएगा। या आर्थिक पैकेज की घोषणा करके न केवल प्रलोभन देगा। बल्कि किसानों की इस स्थिति को सुधारने के लिए उन्हें अच्छी-अच्छी पैदावार होनी वाली फसले, उन्नत बीजों, उर्वरको, एवं कीटकनाशकों का सही प्रयोग, खेती करने का नया तंत्र, तथा झीरो बजट आधारित खेती आदि। उचित और तज्ञ व्यक्ति द्वारा प्रशिक्षण देकर उन्हें ' किसानी ' के लिए प्रोत्साहित कराना आवश्यक है।

प्रस्तुत उपन्यास में हमें दो पक्ष दिखाई देते हैं, पहले पक्ष के अंतर्गत किसानों की समस्याएँ एवं आत्महत्याओं को चित्रित किया गया है। तो दूसरे पक्ष के अंतर्गत इन समस्याओं का समाधान खोज कर आगे बढ़ना है। इसमें हमें कुछ वैज्ञानिक सोच रखने वाले और पढ़े लिखे लोग भी है। इन्हें पता है कि आत्महत्या करने से कुछ नहीं होगा व्यवस्था को बदलना है तो लड़ना होगा संघर्ष करना होगा। केवल आत्महत्या ही एकमात्र उपाय नहीं है। इस प्रकार यह उपन्यास हमारे समक्ष केवल प्रश्न ही खड़ा

E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

नहीं करता तो 'किसानीं' करते समय जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं का पूरा समाधान भी प्रस्तुत करता है । सरकार का भी दायित्व है कि किसानों को कर्ज के बोझ से मुक्ती तथा सामाजिक सुरक्षा प्रदान कराना, कृषि क्षेत्र में नए निवेश को प्रोत्साहित कराना, ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को मजबूत करके किसानों की आय में वृद्धि कराना। उनकी फसलों (धान) को बाज़ार में **न्यूनतम समर्थन मूल्य** से खरीदना। और अंत में किसानों के जीवन - स्तर में भी सुधार लाना अति आवश्यक है।

प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह लिखते हैं - " अपनी इस साहित्यिक विरासत के आधार पर आज यही कहने को जी चाहता है कि भूमंडलीकरण के आक्रमक दौर में नष्ट होती हुई ग्राम संस्कृति और आत्महत्या के लिए विवश किसानों को केंद्र में रखकर किया जाने वाला कथा - सृजन ही अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकता है।" (उपन्यास के फ्लैप से साभार) ।

संदर्भ :

1) फॉस - संजीव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ क्र- 15.
2) वही- पृष्ठ क्र - 36
3) वही - पृष्ठ क्र – 66.
4) वही - पृष्ठ क्र – 98.
5) वही - पृष्ठ क्र – 186.